आवाज़ ... आम आदमी की

इन्क़िलाबी नज़र

लखनऊ, बुधवार, 24 अप्रैल 2024

हज़ार योद्धाओं पर विजय पाना आसान है, लेकिन जो अपने ऊपर विजय पाता है वही सच्चा विजयी है।
- गौतम बुद्ध

वर्ष 16 अंक 227 मूल्य 4-00 रुपया पृष्ठ- 12

तापमान - अधिकतम 39.6°C (-0.5) न्यूनतम 23.1°C(-0.9) सेंसेक्स 73,738.45 (+089.84) निफ्टी 22,368.00 (+031.60) सोना 73,310 चांदी 83,000 मुद्रा - डालर 83.39 दिरहम 22.67 रियाल 22.20

मेडिकोज को मिला बीएलएस और एसीएलएस का प्रशिक्षण

एरा विश्वविद्यालय

लखनऊ (सं)। कार्डियक अरेस्ट होने पर शुरुआती 2-3 मिनट बहुत अहम होते हैं। इस दौरान मरीज को सीपीआर मिल जाए तो उसकी जान बचाना आसान हो जाता है। इसलिए डाक्टर के साथ आम आदमी को भी बेसिक लाइफ सपोर्ट और एडवांस कार्डियक लाइफ सपोर्ट का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। यह कहना है डॉ. मुस्तहसिन मलिक का।

डॉ. मलिक एरा विश्वविद्यालय व संजय गांधी पीजीआई के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित बेसिक लाइफ सपोर्ट कोर्स और एडवांस कार्डियक लाइफ सपोर्ट प्रोवाइड कोर्स के तहत ट्रेनिंग ले रहे मेडिकोज को सम्बोधित कर रहे थे। इस कार्यक्रम को अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन से एक्रीडेशन प्राप्त है। दो दिवसीय कार्यक्रम में मंगलवार को एरा विश्वविद्यालय की प्रो वाइस चांसलर प्रोफेसर फरजाना महदी, डीन एमिरटस प्रो. एमएमए फरीदी, प्रधानाचार्य और सीएमएस प्रो. जमाल मसूद, कोर्स डायरेक्टर प्रो. संदीप साहू, संयोजक अध्यक्ष प्रो. संजय चौबे, एराज लखनऊ मेडिकल कालेज एण्ड हॉस्पिटल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. सुरजीत बासू समेत कई चिकित्सक व छात्र मौजूद थे। डॉ. मुस्तहसिन मलिक ने अपने लेक्चर में बताया कि आज कार्डियक अरेस्ट की घटनाओं में तेजी बढ़ोतरी हो रही है। इसकी वजह खराब लाइफ स्टाइल और फास्ट फूड का बढ़ता चलन है। उन्होंने बताया कि अगर थोड़ी सी सावधानी और सतर्कता बरती जाए तो कार्डियक अरेस्ट के मरीज की जान बचायी जा सकती है। इसी उद्देश्य से एरा के पीजी छात्रों को बीएलएस और एसीएलएस की ट्रेनिंग दी जा रही है। डॉ. मलिक ने बताया कि देश में कार्डियक अरेस्ट से हॉस्पिटल में हो तो केवल 7.7 प्रतिशत मरीजों की ही जान बच पाती है। एरा हॉस्पिटल के प्रशिक्षित डॉक्टरों की देखरेख में दिए जा रहे उच्च स्तरीय इलाज के कारण यहां कार्डियक अरेस्ट से 14.7 प्रतिशत मरीजों की जान बचायी जा रही है। यह चिकित्सीय दृष्टिकोण से अच्छे संकेत हैं।

उन्होंने कहा कि अगर सभी चिकित्सकों और पैरामेडिकल स्टाफ को बीएलएस और एसीएलएस की ट्रेनिंग दी जाए और वह उसका इस्तेमाल करें तो कार्डियक अरेस्ट के अधिक मरीजों की जान बचायी जा सकती है।

क्या है बीएलएस और एसीएलएस

डॉ. मुस्तहसिन मलिक ने बताया कि अगर कार्डियक अरेस्ट होता है और वहां चिकित्सीय सुविधा न हो तो क्या करें। इसके लिए लोगों को खासकर हेल्थ केयर प्रोवाइडर को बीएलएस की ट्रेनिंग दी जाती है। यदि अस्पताल के भीतर किसी मरीज को कार्डियक अरेस्ट होता है उस स्थिति में मरीज को कैसे मैनेज किया जाना है इसका प्रशिक्षण एडवांस कार्डियक लाइफ सपोर्ट के तहत दिया जाता है। दोनों ही प्रशिक्षण कोर्स बहुत महत्वपूर्ण हैं और नेशनल मेडिकल काउंसिल ने इसे अनिवार्य कर दिया है।